RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

हिन्दी गद्य साहित्य में नाटक की उत्पत्ति

डॉ0 बबीता रावत

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
कला मनोरंजन नाटक

ABSTRACT

भारतीय मनीषियों ने कला को मनोरंजन और षिक्षा तक ही सीमित रखा, किन्तु पाष्चात्य पण्डितों ने कला को जीवन के अध्यात्म से सम्बन्धित किया। कलावादियों का यह तर्क है, कि नाटक मनोरंजन का साधन है, किन्तु साथ–साथ इसमें तथ्य की मात्रा समूची रहनी चाहिए। हाँ तथ्य के प्रगट करने के साधनों में कला की पूर्ण सहायता ली जा सकती है। इन लोगों का विष्वास है कि संसार स्वयं संर्घष और द्वन्द का क्षेत्र है, मनुष्य चारों ओर अनेक वैषम्यों को मित्य देखता भोगता चला आ रहा है इसलिए उन्हें देखने तथा सहन करने का अभ्यास हो गया है। इन कलावादियों का यह प्रस्ताव है कि नाटक में विनोद के कलात्मक साधनों अर्थात् गीत नृत्य और नृत्य का प्रचुर प्रयोग किया जाए। नाटक को जीवन का आधार माना जाता है।

भूमिका

पाश्चात्य संस्कृति का मूलाधार ग्रीक सभ्यता है। सहस्त्रों वर्ष प्राचीन इजिप्ट और बैबिलोनिया के साम्राज्यों के नष्ट होने पर ग्रीक सभ्यता का उदय हुआ था। पाष्चात्य कला का प्राचीनतम् मानसिकतामय रूप हम, होमर के काव्यों में पाते हैं। होमर का काल ईसा–पूर्व आठवी शताब्दी है। होमर के महाकाव्यों के बाद ग्रीस में नाटकों का विकास ईसा–पूर्व चौथी शताब्दी तक होता रहा। इस काल में अधिकतर हास्य रस प्रधान नाटक ही थे। इसमें जीवन की सभी आधार वस्तुओं को आलम्बन बनाया गया था। ग्रीस के अग्रणी अपने समाज के सम्बंध में पुरातन प्रिय थे। हास्य का आलम्बन में पुरातन प्रिय थे। इसी से सभी नाटकों में नवीन आदर्षो का उपहास किया गया है।

भारतीय दृष्टि में कला और काव्य को पृथक माना गया। काव्य से कला को हीन समझा गया। कला की सृष्टि में षिक्षा और अभिप्राय में मनोरंजन की मुख्यता मानी गई। काव्य की आत्मा दिव्य प्रेरणा मानी गई। इससे भारतीय और पाष्चात्य आचार्यो की दृष्टि कला के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न हो गई। भारतीय दृष्टि से कला का सम्बन्ध स्थूल षिल्प गुण और मनोरंजन के साथ था।

नाटकोत्पत्ति

नाटकों की उत्पत्ति कब हुई और कैसे हुई यह विषय अनुसंधान का है। यह विषय आज भी विवादग्रस्त है, और सम्भवतः रहेगा कि नाटक का उद्भावक कौन है, या नाटक का प्रचलन कब हुआ ? वास्तव में मानव जीवन के दैनिक क्रियाकलाप, गतिविधि नाटक के विभिन्न अंग और दृष्य ही तो हैं यदि थोड़े से शब्दों में यह कहा जाए कि नाटक की उत्पत्ति मानव की उत्पत्ति के साथ हुई है। तो कदापि भी असत्य नहीं होगा।

वास्तव में नाटक की उत्पत्ति के बीज वैदिक काल में उपलब्ध होने लगे। उनके विभिन्न रूप नृत्य, नृत्याख्यान, स्वांगपूर्ण नृत्य, संवाद आख्यान युक्त नृत्य रहे होंगे कला के अपरिष्कृत तत्व जनता के बिखरे हुए थे, और कालान्तर में वेदों की रचना के समय वे संष्लिष्ट होकर वैदिक रचनाओं में दृष्टव्य होने लगे। वैदिक काल के उत्तरार्ध में ही सम्भवतः इसका निष्चित स्वरूप बना होगा।

हाँ भरत मुनि के नाट्यषास्त्र में नाटक के विभिन्न अंगो का सांगोपांग विवेचन प्राप्त होता है। तो यह निष्चय है कि इनसे पूर्व भी कुछ नाट्यषास्त्र के ग्रन्थ अवष्य रहे होंगे। जब नाट्यषास्त्र के ग्रन्थ थे तो उनसे पूर्व नाटक भी अवष्य होंगे, क्योंकि लक्षण ग्रन्थों का निर्माण लक्ष्य ग्रन्थों से पूर्व होता है। इस प्रकार नाटकों की उत्पत्ति आदिकाल में हुई थी और मानव की सभ्यता के विकास के साथ–साथ इसका विकास एवं पूर्णता प्राप्त करना सहज सम्भाव्य है।

उत्पत्ति सम्बन्धी विभिन्न मत

भारतीय परम्परा के अनुसार नाट्य शास्त्र पंचम वेद है। इसके निर्माता ब्रह्म जी हैं।

दैवी उत्पत्ति

''प्रणम्य शिक्षा देवौ पितामह महेश्वरौ। नाट्यशास्त्र प्रवश्यामि ब्रहाणा यदुदाहतम्।'' जब त्रेतायुग में लोग दुख से आकारान्त होने लगे तो उन्होंने ब्रह्म जी के पास जाकर अपने मनोरंजन के लिए किसी सामग्री की मांग की। ब्रह्म जी ने उनकी इस आवष्यकता की पूर्ति के लिए तथा साथ ही साथ सांस्कृतिक एकता अर्थात् आर्यो और अनार्यो के विभेद को मिटाने के लिए पंचम वेद का निर्माण किया। जिसे नाट्य शास्त्र नाम से अभिहित किया गया है।

वैदिक उत्पत्ति

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कुछ विद्वानों ने भरतमुनि के कथन **'जग्रह पाठ्यम्'** से प्रेरित होकर नाटकों की उत्पत्ति वैदिक मानी है। **दैवी मत** और **वैदिक मत** में वास्तव में कोई विषेष भेद नहीं है।

धार्मिकोत्पत्ति

इस दिषा में केवल भारतीय विद्वानों ने ही वहीं वरन् पाष्चात्य विद्वानों ने भी अनुसंधान किया है। डॉ0 कीथ ने पंतजलि महाभाष्य में नाटक की धार्मिक उत्पत्ति के मत की स्थापना की है। अपने मत की पुष्टि के लिए उन्होंने अनेक उदाहरण स्वरूप नाटकों को भी गिनाया है, जैसे – कंसवध, बलिवध, इन्द्र–विजय आदि। धार्मिक भावना ने इस ओर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। भारतीय नाटकों का सुखान्त होना भी उनके मत की पुष्टि में सहायक सिद्ध होता है।

वीर पूजा से नाट्योत्पत्ति

डॉ0 रिजवे ने अपनी पुस्तक **(Dramas and Dramatic Dances in Non-European Races)** में नाटक की उत्पत्ति के सिद्वान्त को वीर–पूजा सम्बद्व माना है। यही मूल भावना नाटक की उत्पादक है। नाटकों में वीरता के तत्व के आधार पर अन्य तत्वों का बहिष्कार या त्याग करना समीचीन नहीं है।

पुत्तलिका नृत्य

डॉ0 पिषेल ने पुत्तलिका नृत्य से नाटकों की उत्पत्ति के सिद्वान्त का प्रतिपादन किया है। नाटकों में सूत्रधार का होना इस बात का प्रमाण सिद्व करता है कि पुत्तलिका से नाटकों की उत्पत्ति हुई है।

इन्द्रध्वज महोत्सव

इन्द्रध्वज महोत्सव या यूनान के पोल डॉस से नाटकों की उत्पत्ति मानना भी उचित नहीं है। ये सामूहिक उत्सव हैं। ये दोनों नाटक के बाद के रूप हैं न कि नाटक के सृष्टा।

प्रो0 डोनाल्ड क्लाइव स्टुअर्ट ने बच्चों की स्वाभाविक क्रिया से नाटक की उत्पत्ति मानी है। यह मत आंषिक रूप में ठीक लगता है ।

नाटक का अर्थ

पाणिनि नाट्य की उत्पत्ति **'नट्'** धातु से मानते हैं, और रामचन्द्र गुणचन्द्र ने **'नाट्यदर्पण'** में इसका उद्भव **'नाट्'** धातु से माना है।

''सिद्धांन्त कौमुदी'' के तिडन्त प्रकरण में नाट्य की उत्पत्ति इस प्रकार है–

नट् नृतौ। इत्थमेव पूर्वमपि पठितम्। यत्कारिष नटत्यपदेशः।

भरतमुनि के नाटयषास्त्र में स्वयं ब्रह्म नाटक की परिभाषा देते हुए कहते हैं, कि यह पंचम वेद सम्पूर्ण त्रैलोक्य के भावों का अनुकरण है। इस सूत्र को अधिक स्पष्ट करते हुए ब्रहा समझा रहे हैं कि **'नाट्य में कहीं धर्म हैं तो कहीं खेल, कहीं अर्थ ज्ञान है तो कहीं शान्ति कहीं हास्य है तो कहीं युद्ध, कहीं काम का वर्णन है तो कही वध का।''** भरतमुनि के नाटयषास्त्र से मिलती – जुलती नाट्य की परिभाषा यूनान के विद्वान अरस्तु ने कि है उनका कहना है कि – ट्रैजेड़ी उस व्यापार विषेष का अनुकरण है जिसमें गम्भीरता और पूर्णता हो जिसकी भाषा प्रत्येक प्रकार के कलात्मक अलंकारों से सुसज्जित हो, और जिसमें अनेक विभाषाएँ भी पाई जाती हों, तो करूणा और भय का प्रदर्षन करके इन मनोविकारों का उचित परिष्कार कर सके ''

इससे यह निष्कर्ष निकला है, कि **'नट'** धातु का अर्थ गात्र विक्षेपण एंव अभिनय दोनों ही था। किन्तु कालान्तर में 'नृत' धातु का प्रयोग गात्र विक्षपण के अर्थ में होने लगा, और 'नट्' का प्रयोग अभिनय के अर्थ में। इस प्रकार गम्भीरता से विचार करने पर नृत' और 'नट्' नाट्य की ही दो प्रथम भूमिकाएँ प्रतीत होती हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार नाटक साहित्य का प्रमुख अंग है । संस्कृत में दृष्य काव्य के दष रूपकों में से नाटक एक प्रधान रूप है, किन्तु हिन्दी में रूपक का पर्यायवाचक नाटक है। साहित्य के अन्य अंगों के समान ही नाटक साहित्य की भी अपनी विषेषताएँ हैं। नाट्य साहित्य में एक विषेषता यह है कि जहाँ काव्य है, वहाँ वह अभिनेय भी है। वास्तव में नाटक साहित्य की महत्ता का एक मात्र कारण उसकी अभिनेयता को है।

संदर्भ ग्रंथ

1. ओझा, दषरथ (1954) **'हिन्दी नाटकः उद्भव और विकास'**, दिल्ली ।
2. ओझा, दषरथ (1959) **'नाटय समीक्षा'**
3. झा, दषरथ (1962) **'हिन्दी की नाटय रूपरेखा'** हिन्दी साहित्य
4. संसार, दिल्ली ।
5. यूथ कॉमपिटिषन टाइम्सय पत्राचार संस्थान, हिन्दी संपादक – के0 सी0 मिश्र, इलाहाबाद।

RRIJM 2015, All Rights Reserved